M-2020 PAPER

(मध्यप्रदेश)

Vaishali Shrivastava-0208

(1)

(A) मलखंब म०प्र० का राजकीय खेल
- यह बालकों (पुरुषों) द्वारा खेला जाता है
- खम्बे का उपयोग किया जाता है

(B) छत्तीसगढ़ को 6 जिले स्पर्श करते हैं जो निम्नलिखित हैं
- सिंगरौली, सीधी, शहडोल, अनुपपुर, डिण्डोरी, बालाघाट

(C) जनगण सिंह श्याम

(D) अनुसूचित जाति के लिए प्रदेश में आरक्षित क्षेत्रों की संख्या 4 है।

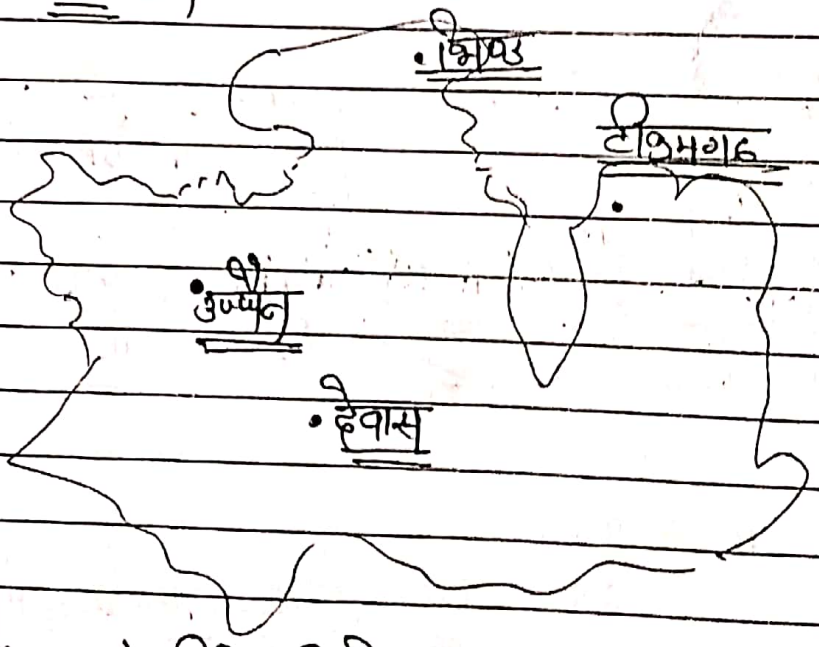

(E) सुशासन एवं नीति विश्लेषण स्कूल : अटल बिहारी बाजपेयी सुशासन एवं नीति स्कूल म०प्र० के भोपाल में अवस्थित है।

(F) चिल्पी श्रेणी ⇒ यह धारवाड क्रम की चट्टानो का रूप है।
- जबलपुर, छिंदवाड़ा, बालाघाट आदि जिलो मे पाई जाती है
- मैंगनीज, क्वार्टजाइट, कॉपर के पाइराइट आदि खनिज पाए जाते है।

(G) माही नदी ⇒ विश्व की एकमात्र नदी जो कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- उद्गम - धार जिले से
- म०प्र० व राजस्थान मे प्रवाहित होती है।

(H) चंबल अभ्यारण्य :- मुरैना मे स्थित है।
- घड़ियाल के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है।
- चम्बल नदी पर इसका नाम चम्बल अभ्यारण्य हुआ है।

(I) जयप्रकाश नारायण सम्मान निधि योजना :- यह मीसा बंदियो को मिलनेवाली सम्मान निधि थी
- छत्तीसगढ़ राज्य की योजना थी वर्ष 2008 मे प्रारंभ की गई थी
- हाल ही मे यह योजना बंद कर दी गई है।

(J) महावीर अहिंसा पुरस्कार :-
- यह पुरस्कार अखिल भारतीय जैन महासभा द्वारा वितरित किया जाता है।
- विंग कमाण्डर अभिनंदन वर्धमान को पहला महावीर अहिंसा पुरस्कार प्रदान किया गया।
- इसमे 2.51 लाख रुपये व स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

(K) भोला गीत :- 1

(L) अवंती बाई :- वर्तमान मंडला जिले की रामगढ़ की रानी थी
- इनका विवाह रामगढ़ के राजा विक्रमादित्य से हुआ था
- अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष में
2

(M) ठक्कर बापा :- इनका पुरा नाम - अमृतलाल विट्ठलदास ठक्कर था
- आदिवासियों के उत्थान के लिए काम किया
- मध्यप्रदेश सरकार द्वारा इनके नाम पर एक पुरस्कार दिया जाता है।
2

(N) बाघ सिचाई परियोजना :- बाघ नदी पर बनाई गई है।
- म.प्र. व महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना
- सिचाई मुख्य उद्देश्य है।
1½

(O) गणगौर नृत्य :- म.प्र. में निमाड़ अंचल का प्रमुख नृत्य है।
- शिव-पार्वती को समर्पित है।
- चैत्र मास में गणगौर उत्सव मनाया जाता है।
1½

(2)
(a) महाराजा छत्रसाल बुंदेला राजपूत कबीले के एक मध्यकालीन भारतीय योद्धा थे, जिन्होने मुगलों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी।
- इनके पूर्वज मुगल साम्राज्य में जागीरदार थे।
- यह छत्रपति शिवाजी से प्रेरित थे। इन्होने महाराष्ट्र की यात्रा की तथा उनसे मार्गदर्शन मांगा
- मराठा पेशवा बाजीराव की पत्नी मस्तानी छत्रसाल की बेटी थी
- साहित्य के संरक्षक - राजा छत्रसाल के दरबार में कई प्रसिद्ध कवि रहते थे जैसे - कवि भूषण, लाल कवि आदि
- धार्मिक दृष्टिकोण - यह एक हिन्दू शासक थे तथा महामति प्राणनाथ जी के शिष्य थे।
स्वामी प्राणनाथजी ने उन्हे आशीर्वाद दिया था - कि "आप हमेशा विजयी रहेंगे तथा हीरे की खदाने आपकी जमीन पर खोजी जाऐंगी और आप एक महान सम्राट बनेंगे"
- छतरपुर जिले का नाम महाराजा छत्रसाल के नाम पर रखा गया है तथा यहाँ छत्रसाल संग्रहालय भी है
- दिल्ली मे महाराजा छत्रसाल के नाम पर "छत्रसाल स्टेडियम" है।
. महाराजा छत्रसाल अपने युग के महान शासक थे जिनकी गौरवगाथा आज भी प्रेरणास्त्रोत बनी हुई है।

(B) बोली भाषा का स्थानीय रूप है, जिसे एक छोटे जनसमूह द्वारा आम बोलचाल के लिए उपयोग किया जाता है।
म०प्र० में विभिन्न बोलियाँ बोली जाती हैं जिन्हे निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

↓ सामान्य बोलियाँ — ↓ जनजातीय बोलियाँ

(i) सामान्य बोलियाँ :- यह राज्य के सामान्य स्थानीय नागरिकों द्वारा बोली जाती है।
उदाहरण - बुन्देली, बघेली, उर्दू, ब्रजभाषा, मालवी, निमाड़ी, खड़ी बोली हिन्दी

(ii) जनजातीय बोलियाँ :- यह बोलियाँ जनजातीय समुदायों के द्वारा बोली जाती है।
म.प्र. में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या वाला राज्य है।
• राज्य की कुछ प्रमुख जनजातीय बोलियाँ - भीली, गोंडी, कोरकु आदि हैं।

(c) बुन्देलखंड, म.प्र. के उत्तर पूर्व में स्थित है, जिसमें सागर, पन्ना, छत्तरपुर, दतिया आदि जिले शामिल हैं।
- बुन्देलखण्ड में बुन्देली भाषा बोली जाती है तथा यहाँ विभिन्न लोकनृत्य व लोक गान प्रचलित हैं।
- प्रमुख लोकनृत्य - बधाई नृत्य, राई नृत्य, कानडा नृत्य, पाई नृत्य आदि।
• बधाई नृत्य :- जन्म, विवाह तथा तीज-त्यौहार पर यह नृत्य पर किया जाता है।
- पुरुष व महिलाएं सभी वाद्ययंत्रों की धुन पर नृत्य करते हैं।

• राई नृत्य :- बुंदेलखण्ड का राई नृत्य भी उत्सवों व त्यौहारों आदि पर किया जाता है।

• कानडा नृत्य :- मुख्य रूप से धोबी समाज के लोगों द्वारा किया जाता है।
- इसमें प्रारंभ में गुरु वंदना की जाती है तत्पश्चात गणानन भगवान की कथा होती है।
• इसमें सारंगी, ढोलक, लोटा आदि वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है।

Scanned with CamScanner

पाई नृत्य :- बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रचलित है।
यह नृत्य शादी-ब्याह एवं नव दुर्गा पर्व के अवसर पर किया जाता है।

- लोकनृत्य जनजातियों के अनुष्ठानों देवी-देवताओं के समक्ष लोक भावनाओं आदि का दर्पण है।
म०प्र० के खजुराहो में "लोकरंजन" नामक एक वार्षिक नृत्य समारोह का आयोजन किया जाता है।

(D) म०प्र० में स्थित गुफाएं –
गुफाएं ऐतिहासिक काल में पहाड़ों को काटकर बनाए गए ऐसे स्थान थे जिनका उपयोग भिन्न-भिन्न उद्देश्यों जैसे, निवास करने, पूजा स्थल, आदी के रूप में किया जाता था।
म०प्र० की प्रमुख गुफाएं
(1) बाघ की गुफाएं – धार जिले में स्थित
- 9 गुफाएं हैं गुप्तकाल में निर्मित
- इनकी तुलना अजंता की गुफाओं से की जाती है।
- विंध्याचल की पहाड़ियों में निर्मित है।

(2) बिलौवा गुफाएं – ग्वालियर में स्थित
- 12वीं शताब्दी में निर्मित
- शैल प्रतिमाएं पाई जाती हैं।

(3) भीमबेठका गुफाएं – औबेदुल्लागंज (रायसेन) में स्थित
- पाषाण कालीन अवशेष मिले हैं।
- खोज – वाकणकर जी द्वारा
- यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में वर्ष 2003 में शामिल

(4) भर्तृहरी गुफाएं – उज्जैन
- 11 वीं सदी में परमारवंशी राजाओं द्वारा निर्मित
- 9 गुफाएं हैं

(5) मृगेन्द्रनाथ गुफाएं – रायसेन
(6) उदयगिरी गुफाएं – विदिशा
- 4वीं-5वीं शताब्दी में निर्मित
- वराह की विशाल प्रतिमा है।

(7) मारा की गुफाएं – सिंगरौली (बौद्धकालीन गुफाएं) आदि।

(8) कोरकू जनजाति :- म०प्र० के दक्षिणी क्षेत्र, मुख्यतः छिंदवाड़ा जिले में पाई जाती है।
- जनजाति की प्रमुख विशेषताएं :-
- शारिरिक विशेषताएं :- रंग काला, आंखे काली, नाक चपटी नथुने फूले, होंठ मोटे, चेहरा गोल

- सामाजिक विशेषताएं :- पितृ सत्तात्मक
- समगोत्री विवाह वर्जित
- कन्या मूल्य चुकाया जाता है,
- लामसेना प्रथा का प्रचलन है।

- आर्थिक विशेषताएं :- जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि है।

- सांस्कृतिक विशेषताएं :- उत्सव प्रेमी
- हिन्दुओं के समान दीपावली, दशहरा होली आदी मनाते हैं
- मृतक संस्कार में "सिडोली" प्रथा प्रचलित है।

सुंदर लिखें
[illegible]

(F) मध्यप्रदेश में मैंगनीज भण्डार की चट्टानों के विभिन्न प्रतिरूपों से प्राप्त होता है।

- मध्यप्रदेश के बालाघाट में सर्वाधिक मैंगनीज प्राप्त होता है बालाघाट को मैंगनीज नगरी कहते हैं।
- एशिया की सबसे बड़ी मैंगनीज खदान भरवेली बालाघाट में ही स्थित है।
- इसके अतिरिक्त बालाघाट में सुकली, कोचवाही, तिरोडी, जामी, रमरमा, सीतापठार आदि मैंगनीज खदान स्थित हैं।

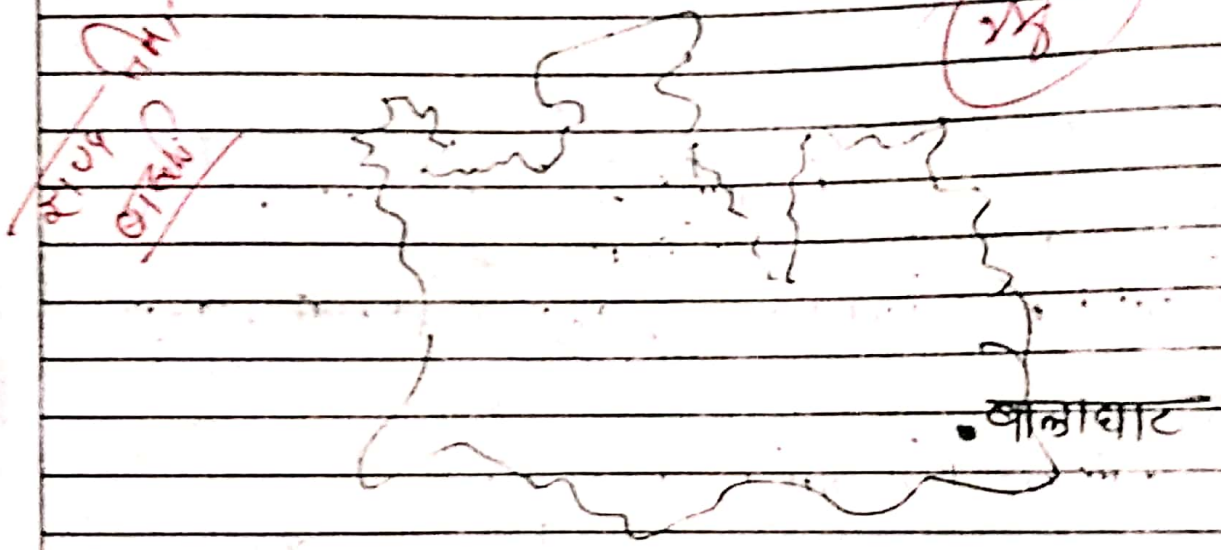

(G) नर्मदा सोन घाटी कर्क रेखा के समान्तर स्थित है। तथा म०प्र० के कुल क्षेत्रफल का २०% नर्मदा सोन घाटी है।

- नदियों को सभ्यता की जननी कहा जाता है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदियों की घाटियों में ही हुआ है।
- नर्मदा नदी को म०प्र० की जीवन रेखा कहा जाता है।

— आर्थिक महत्व — नर्मदा घाटी में काली मिट्टी पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

- जो खाद्य तथा औद्योगिक दोनों फसलों के लिए उपयुक्त है।
- काली मिट्टी में कपास का उत्पादन किया जाता है, जिससे वस्त्र उद्योगों को आधार प्राप्त होता है।
- सोयाबीन के उत्पादन में म०प्र० प्रथम स्थान पर है।
- यहाँ गेहूँ, कपास, ज्वार, सोयाबीन आदि फसलें बोई जाती हैं।

(I) सुभद्रा कुमारी चौहान — जन्म सन् 1904 में उत्तरप्रदेश में हुआ था
- हिन्दी की महान कवियत्री थी
- इनका विवाह "ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान" से हुआ था, जो खण्डवा के निवासी थे
- इन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन (1921) में मुख्य भूमिका निभाई थी तथा यह पहली महिला सत्याग्रही बनी जिन्हें अरेस्ट किया गया था
- इनकी प्रसिद्ध रचना — "झाँसी की रानी"
- मृत्यु — 1948 ई. में हुई थी।

(K) म०प्र० एक कृषि प्रधान राज्य है, राज्य की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, म०प्र० को 6 बार कृषिकर्मण पुरस्कार से नवाजा जा चुका है।
- मध्यप्रदेश दलहन, तिलहन, सोयाबीन, चना आदि फसलों के उत्पादन में अग्रणी राज्य है।
- म०प्र० की कृषि अनुकूल जलवायु तथा जल की प्रचुरता आदि के कारण यहाँ निरंतर दलहन फसलों के उत्पादन में वृद्धि देखने को मिलती है।

- सोयाबीन के उत्पादन मे म०प्र० प्रथम स्थान पर है साथ ही यहाँ एशिया का सबसे बडा सोयाबीन कारखाना उज्जैन मे स्थित है।
- म०प्र० मे प्रमुख अरहर उत्पादक जिले - छिंदवाडा, ग्वालियर, मुरैना, भिंड, पन्ना, सागर, इंदौर आदि है।

अतः विभाजन (2000) के बाद भी म०प्र० का दलहन उत्पादन मे प्रथम स्थान बनाए रखना, यहाँ दलहन फसलो की प्रचुरता को दर्शाता है।

(L.) ग्रामीण जनसंख्या अर्थात जनसंख्या का वह भाग (संख्या) जो गाँवो मे निवास करती है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार म०प्र० की कुल जनसंख्या (लगभग) 72626809 है। जिनमे से लगभग 5,25,57,000 (लगभग) लोग गाँवो मे निवास करते है।
- वर्ष 2011 की जनगणना मे ग्रामीण दशकीय वृद्धि दर ≃18.42% बताई गई थी जो शहरी जनसंख्या वृद्धि दर लगभग 25.69% से कम है। जिसका मुख्य कारण ग्राम वासियो का शहरो की ओर पलायन माना जाता है।
- ग्रामीण साक्षरता (2011) की जनगणना अनुसार लगभग 63.94% है।
- ग्रामीण पुरुष व महिलाओ की साक्षरता दर भी औसत साक्षरता दर से कम आँकी गई है। जैसे वर्ष 2011 मे जहाँ औसत पुरुष साक्षरता 78.3% थी वही ग्रामीण पुरुष साक्षरता लगभग 74.74% थी।
- अतः म०प्र० मे ग्रामीण जनसंख्या मे आज जागरूकता व आगे बढने की चाह दृष्टिगोचर होती है।

Scanned with CamScanner

(3)
(A) म॰ प्र॰ भारत का हृदय प्रदेश है, जो अपने प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वैभव से आम जन को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

- म॰प. में पर्यटन स्थलों को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - जैसे -

- प्राकृतिक पर्यटन स्थल
- ऐतिहासिक — " —
- धार्मिक — " —
- पुरातात्विक — " —
- वन्य प्राणी पर्यटन स्थल

• प्राकृतिक पर्यटन स्थल - जहाँ प्रकृति की सुन्दरता का अनुभव होता है। उदाहरण -
विभिन्न जलप्रपात एवं हिल स्टेशन्स
- चचाई जलप्रपात (रीवा), दुग्धधारा, कपिलधारा, धुआँधार (जबलपुर) तथा पचमढ़ी, आदि।

• ऐतिहासिक पर्यटन स्थल :- विभिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता है

गुफाएं | महल | मकबरे | दुर्ग

- गुफाएं :- बाघ की गुफाएं - (धार)
उदयगिरी की गुफाएं (विदिशा) कैलाशी गुफाएं (ग्वालियर)
मृगेन्द्रनाथ की गुफाएं (रायसेन), भर्तहरि (उज्जैन)
मारा (सिंगरौली), आदमगढ़ की गुफाएं (होशंगाबाद) आदि

- महल :- गूजरी महल (ग्वालियर), बादल महल (रायसेन / ग्वालियर)
दाई का महल (मांडू), नौखण्डा महल (चंदेरी)
सतखंडा महल (दतिया), जहाँगीर महल (ओरछा)
गोहद महल (भिण्ड) आदि

(3) (A) म॰प्र॰ भारत का हृदय प्रदेश है, जो अपने प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वैभव से आम जन को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।
- म॰प्र॰ में पर्यटन स्थलों को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - जैसे -

- प्राकृतिक पर्यटन स्थल
- ऐतिहासिक — " —
- धार्मिक — " —
- पुरातात्विक — " —
- वन्य प्राणी पर्यटन स्थल

• प्राकृतिक पर्यटन स्थल – जहाँ प्रकृति की सुन्दरता का अनुभव होता है। उदाहरण –
विभिन्न जलप्रपात एवं हिल स्टेशनस
- चचाई जलप्रपात (रीवा), दुग्धधारा, कपिलधारा, धुँआधार (जबलपुर) तथा पचमढ़ी, आदि।

• ऐतिहासिक पर्यटन स्थल :– विभिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता है

↓ गुफाएं | ↓ महल | ↓ मकबरे | ↓ दुर्ग

- गुफाएं :– बाघ की गुफाएं = (धार), उदयगिरी की गुफाएं (विदिशा), विलोबाकी गुफाएं (ग्वालियर), मृगेन्द्रनाथ की गुफाएं (रायसेन), भर्तहरि (उज्जैन), मारा (सिंगरौली), आदमगढ़ की गुफाएं (होशंगाबाद) आदि

- महल :– गूजरी महल (ग्वालियर), बादल महल (रायसेन/ग्वालियर), दाई का महल (मांडु), नौखण्डा महल (चंदेरी), सतखण्डा महल (दतिया), जहांगीर महल (ओरछा), गोहद महल (भिण्ड) आदि

- मकबरे :-

तानसेन का मकबरा (ग्वालियर), मोहम्मद गौस (ग्वालियर) रानी लक्ष्मीबाई की समाधी ग्वालियर आदि।

- दुर्ग :- ग्वालियर का दुर्ग (ग्वालियर), धार का किला, असीरगढ़ का किला, चंदेरी का किला, गिन्नौरगढ़ किला, ओरछा दुर्ग, रायसेन दुर्ग आदि

• धार्मिक पर्यटन स्थल :- प्रमुख धार्मिक स्थल -

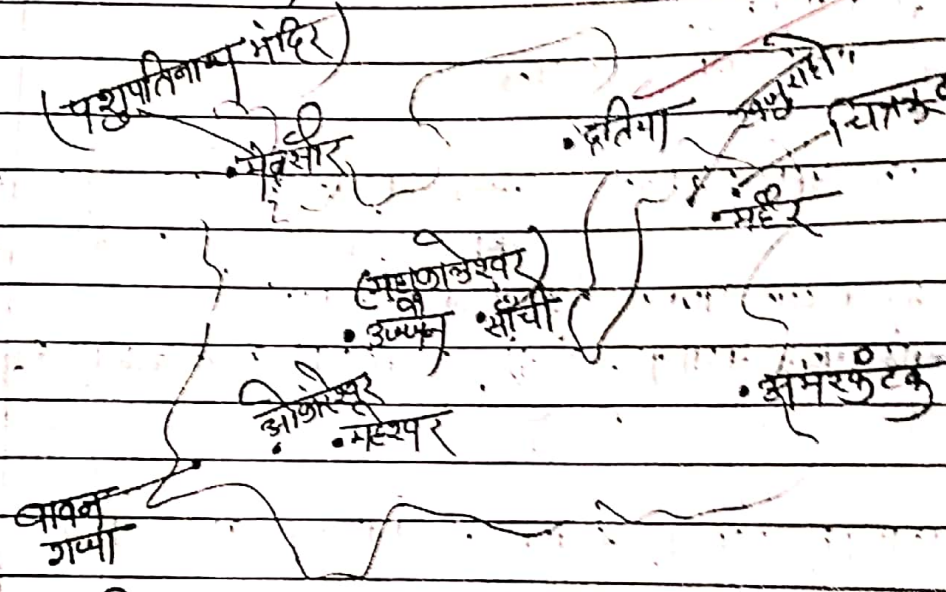

- महाकालेश्वर व ओंकारेश्वर 12 ज्योतिर्लिंगों में से म०प्र० में विद्यमान 2 ज्योतिर्लिंग है।

• पुरातात्विक पर्यटन स्थल :-

- नवदाटोली - खरगौन (ताम्रपाषाण कालीन स्थल)
- कसरावद - खरगौन (ताम्रपाषाण कालीन स्थल)
- भीमबेटिका - रायसेन (पुरापाषाण कालीन स्थल)
- ऐरण - सती प्रथा के प्रथम साक्ष्य मिले हैं।

आदि।

पर्यटन स्थलों की समस्याएं

वन्य प्राणी पर्यटन स्थल :- हाल ही में हुई बाघ गणना के अनुसार म०प्र० सर्वाधिक बाघों वाला राज्य है।

- म०प्र० में लगभग 11 राष्ट्रीय उद्यान व 31 से अधिक राष्ट्रीय अभयारण हैं।

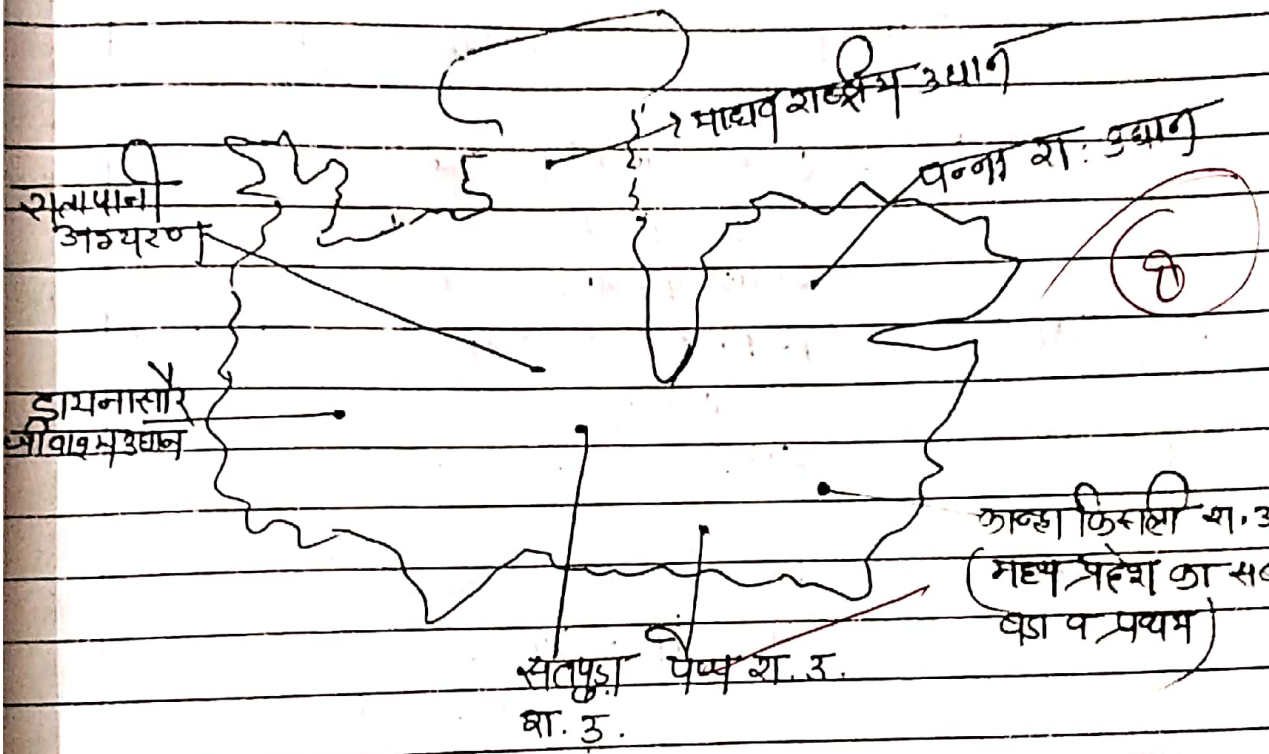

3 म०प्र० के गठन पर संक्षिप्त निबंध :-

म०प्र० भारत के मध्य में स्थित, भारत का दूसरा (क्षेत्रफल की दृष्टि) बड़ा राज्य है, भारत के प्रथम प्र. मंत्री पं. नेहरु ने इसे "हृदय प्रदेश" तथा मध्यप्रदेश नाम दिया।

- ब्रिटिश भारत में म०प्र० विभिन्न भागों व नामों में विभाजित था :-
सेन्ट्रल प्रोविन्स एंव बरार, भोपाल (रियासत), बुन्देलखण्ड राज्य ~~बघेलखण्ड~~ आदि। म०प्र० नाम का कोई राज्य नहीं था

- आजादी के बाद फजल अली आयोग (1953 ई०) का गठन हुआ की अनुसंशा पर नवीन म०प्र० राज्य को जिसे 4 भागो मे बाँटा गया था।

- पार्ट 'A' - जिसके अन्तर्गत सेन्ट्रल प्रोविन्स एवं बरार, छत्तीसगढ़, बघेलखण्ड, आदि क्षेत्र आते थे।

इसकी राजधानी - नागपुर
प्रमुख - पं. रविशंकर शुक्ल

- पार्ट 'B' - इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश के पश्चिम की रियासते आती थी।
राजधानी - इंदौर, ग्वालियर, प्रमुख - लीलाधर सिं०

- पार्ट 'C' - म०प्र० के उत्तर मे स्थित रियासते
राजधानी - रीवा
प्रमुख - पं. शंभुदयाल शुक्ल

: भोपाल स्टेट - भोपाल (वर्तमान) तथा आस-पास क्षेत्र
राजधानी - भोपाल
प्रमुख - डॉ. शंकरदयाल शर्मा

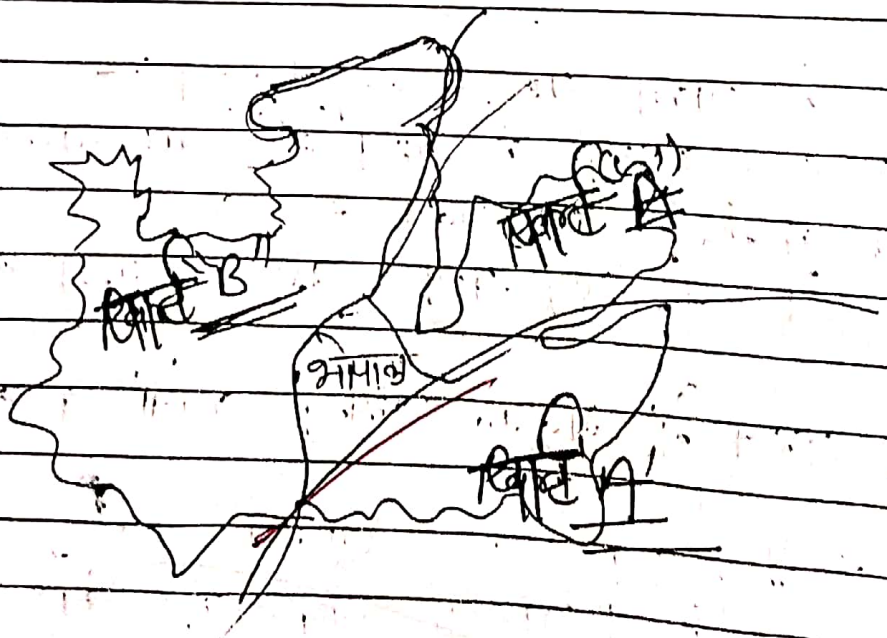

इन समस्त परिवर्तनों सहित 1 नवंबर 1956 को मध्यप्रदेश का गठन कुछ भागों को किसी अन्य राज्यों को देकर तथा कुछ राज्य क्षेत्र को म०प्र० में मिलाकर किया गया, जैसे भोपाल भी अब म०प्र० का भाग बन गया तथा पार्ट ए व बी के कुछ हिस्सों को पड़ोसी राज्यों को दे दिया गया

- इसके पश्चात म०प्र० की राजधानी "भोपाल" को बनाया गया जो सीहोर जिले की तहसील थी इस समय म०प्र० में 43 जिले व 9 संभाग थे
- 1980 में चंबल व बस्तर संभाग बना तथा बाद में होशंगाबाद (नर्मदापुरम) संभाग बना
- 1972 में भोपाल व राजनांदगाँव दो नए जिले बने
- अब भी जिलों की संख्या 45 व संभाग 12 थे।
- 1982 में बी.पी. दुबे की अध्यक्षता में जिला पुनर्गठन समिति का गठन हुआ जिनकी सिफारिश पर 1998 में 10 जिले बने
- तथा 1998 ई में ही सिंहदेव समिति की सिफारिश पर 6 नए जिले बने
- 1 नवंबर वर्ष 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य म.प्र. से अलग हुआ था म.प्र. में 9 संभाग व 45 जिले शेष बचे थे।

इसके पश्चात वर्ष 2003 तथा 2008 ई तथा 2013 ई. में नवीन जिलों का गठन हुआ तथा हाल ही में वर्ष 2018 में 52वां जिला निवाड़ी (टीकमगढ़ से पृथक) गठित किया गया।

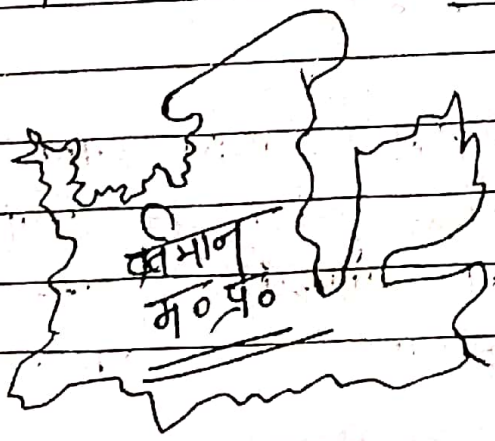

अतः वर्तमान म०प्र० में 52 जिले तथा 10 संभाग है

9

तथ्य कहाने शब्द सीमा पर
ध्यान दे प्रत्येक प्रश्न मे

3

(c) नर्मदा नदी को म.प्र. की जीवन रेखा कहते है विवेचना
जीवन रेखा अर्थात वह रेखा जो जीवन का निर्धारण तथा आयु ज्ञात करने मे सहायक होती है यह समान्यत: हस्तविज्ञान मे उपयोग मे आने वाला शब्द है।

नर्मदा नदी इस प्रदेश को वह सारे संसाधन उपलब्ध कराती है जो जीवित रहने के लिए आवश्यक होते है। अत: इसे म.प्र. की जीवन रेखा कहा जाना उचित ही प्रतीत होता है।

- नर्मदा का अपवाह क्षेत्र सम्पूर्ण प्रदेश का लगभग 29% है।
- यह म.प्र. के लगभग 16 जिलो से गुजरती है इसकी लम्बाई म.प्र. मे लगभग 1077 K.m है।
- नर्मदा नदी पर कई विद्युत परियोजनाए विद्यमान है अभी हाल ही मे सरदारसरोवर बांध का निर्माण गुजरात राज्य मे नर्मदा नदी पर किया गया है जिसमें कुल विद्युत निर्माण का 50% से अधिक भाग म.प्र. को प्राप्त होता है।
- इस प्रकार नर्मदा नदी से प्राप्त जल का उपयोग सिंचाई के लिए कर अधिक मे सिंचित क्षेत्र प्राप्त कर अधिक फसल उगाई जाती है।
- इस नदी के किनारे कई पर्यटन स्थल विद्यमान है जो राजस्व मे वृद्धि करने मे सहायक सिद्ध होते है।

इस प्रकार नर्मदा नदी खाद्यान्न, जल स्वच्छ पर्यावरण, मनोरमदृश्य, वित्त, विद्युत आदि चीजे प्रदान कर जीवन दायिनी सिद्ध होती है। अत: "नदियाँ को सभ्यता की जननी" कहना उचित प्रमाणित करती है।